8 स्वराज्य की नींव

- विष्णु प्रभाकर

उन्मुखीकरण

शासक का यह दायित्व होता है कि सबका बराबर ध्यान रखना चाहिए। विपत्ति की हालत में धैर्य और समयस्फूर्ति से काम लेना चाहिए। क़ानून और नियमों का समान रूप से अनुसरण करना चाहिए। जो शासक अधिकार में क्षमा का गुण रखता है, निस्संदेह वह आदर्श शासक कहलाता है।

प्रश्न

1. शासक को विपत्ति की हालत में कैसे काम लेना चाहिए?
2. आपकी नज़र में आदर्श शासक के लक्षण क्या हो सकते हैं?
3. सुव्यवस्थित शासन के गुण क्या हो सकते हैं?

उद्देश्य

छात्रों को साहित्य में एकांकी विधा से परिचित कराना, एकांकी की भाषा व रचना शैली से अवगत कराना और एकांकी लेखन के लिए प्रोत्साहित करना एवं इसके साथ-साथ छात्रों में देश के लिए समर्पित होने की भावना का विकास करना इसका उद्देश्य है।

विधा विशेष

एकांकी साहित्य की वह विधा है, जो नाटक के समान अभिनय से संबंधित है। एकांकी का अर्थ है- एक अंक वाला। एकांकी में किसी एक ही समस्या को बताया जाता है। यह एक ऐतिहासिक घटना प्रधान एकांकी है।

लेखक परिचय

विष्णु प्रभाकर का जन्म सन् 1912 में हुआ। वे आदर्शप्रिय व्यक्ति थे। इन्हें प्रेमचंद परंपरा का 'आदर्शोन्मुख यथार्थवादी' लेखक कहा जाता है। 'आवारा मसीहा' नामक रचना पर इन्हें 'सोवियत लैंड नेहरु पुरस्कार' से सम्मानित किया गया है। भारत सरकार ने इन्हें 'पद्म भूषण' सम्मान से सम्मानित किया है।

छात्रों के लिए सूचनाएँ

1. विषय प्रवेश ध्यान से पढ़िए, पाठ्य विषय समझिए।
2. पाठ ध्यान से पढ़िए, जिस शब्द का अर्थ समझ में नहीं आता उसके नीचे रेखा खींचिए।
3. रेखांकित शब्दों के अर्थ शब्दकोश में ढूँढ़िए।
4. समझ में न आने वाले अंश हो तो छात्र समूहों में या अध्यापक से चर्चा कीजिए।

विषय प्रवेश : *"खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी थी" सुभद्रा कुमारी चौहान की यह पंक्ति लक्ष्मीबाई की वीरता को प्रकट करती है। लक्ष्मीबाई ने यह सिद्ध कर दिखाया कि अबला हमेशा अबला नहीं रहती। आवश्यकता पड़ने पर वह सबला भी बन सकती है। लक्ष्मीबाई ने सच्चे अर्थों में देश की स्वतंत्रता की नींव रखी थी। प्रस्तुत पाठ में देश के प्रति उनकी कर्मपरायणता के बारे में बताया जा रहा है।*

(पात्र : लक्ष्मीबाई, जूही, मुंदर, रघुनाथराव, तात्या, सेनानायक)

(रंगमंच पर युद्धभूमि का दृश्य अंकित किया जा सकता है। कैंप कहीं पास ही लगा हुआ है। महारानी लक्ष्मीबाई के तंबू का एक भाग दिखायी देता है। परदा उठने पर महारानी लक्ष्मीबाई अपनी सखी जूही के साथ उत्तेजित अवस्था में मंच पर प्रवेश करती हैं। दोनों लाल कुर्ती के सैनिकों की वेशभूषा में हैं।)

लक्ष्मीबाई: मेरे देखते-देखते क्या से क्या हो गया जूही। झाँसी, कालपी, ग्वालियर कहाँ गये। परंतु मंज़िल है कि पास आकर भी हर बार दूर चली जाती है। स्वराज्य को आते हुए देखती हूँ, परंतु दूसरे ही क्षण मार्ग में हिमालय अड़ जाता है। उसे पार करती हूँ तो महासागर की डरावनी लहरें थपेड़े मारने लगती हैं। उनसे जूझती हूँ तो नाविक सो जाते हैं। देखो जूही, उधर क्षितिज पर देखो। कैसी लपलपाती हुई लपटें उठ रही हैं। सारा आकाश धूम घटाओं से छाया हुआ है। प्रलय की भूमिका है, लेकिन राव साहब हैं कि रक्तमंडल की छाया में ऐशो आराम में मशगूल हैं। (आवेश में आते-आते सहसा मौन हो जाती है। जूही कुछ कहने के लिए मुँह खोलती है कि महारानी फिर बोल उठती है।) जूही, जूही, मैंने प्रतिज्ञा की थी कि मैं अपनी झाँसी नहीं दूँगी। लेकिन झाँसी हाथ से निकल गयी जूही। (सहसा तीव्र होकर) नहीं, नहीं, झाँसी हाथ से नहीं निकली। मैं अपनी झाँसी नहीं दूँगी। मैं अकेली हूँ, लेकिन उससे क्या? मैं अकेली ही झाँसी लेकर रहूँगी।

जूही : कौन कहता है, आप अकेली हैं महारानी, आप तो गीता पढ़ती हैं। फिर यह निराशा कैसी?

लक्ष्मीबाई: मैं निराश नहीं हूँ। मैं जानती हूँ कि मैं झाँसी लेकर रहूँगी, लेकिन क्या तुम नहीं जानती कि उस दिन बाबा गंगादास ने मुझसे क्या कहा था? "जब तक हमारे समाज में छुआछूत और ऊँच-नीच का भेद नहीं मिट जाता, जब तक हम विलासप्रियता को छोड़कर जनसेवक नहीं बन जाते, तब तक स्वराज्य नहीं मिल सकता। वह मिल सकता है केवल सेवा, तपस्या और बलिदान से।"

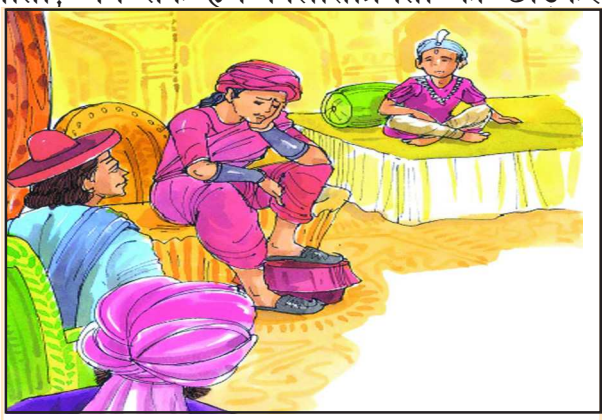

जूही : लेकिन महारानी, उन्होंने यह भी तो कहा था कि स्वराज्य प्राप्ति से बढ़कर है स्वराज्य की स्थापना के लिए भूमि

तैयार करना, स्वराज्य की नींव का पत्थर बनना। सफलता और असफलता दैव के हाथ में है। लेकिन नींव के पत्थर बनने से हमें कौन रोक सकता है? वह हमारा अधिकार है।

लक्ष्मीबाईः (मुस्कुराकर) शाबाश मेरी कर्नल, तुम लोगों से मुझे यही आशा है। जिस स्वराज्य की नींव तुम जैसी नारियाँ बनने जा रही हैं, वह निश्चय ही महान होगा। मुझे इस बात की चिंता नहीं है कि वह मेरे जीवनकाल में आता है या नहीं आता, लेकिन मुझे इस बात का दुख अवश्य है कि हमारे पास तात्या जैसे सेनापति हैं, फिर भी हमारी सेना में अनुशासन नहीं है। हमारे पास ग्वालियर का क़िला है, फिर भी हम कुछ नहीं कर पा रहे हैं। क्यों? जानती हो क्यों?

जूही : जानती हूँ महारानी, हम विलासिता में डूब गये हैं।

(तभी मुस्कुराती हुई मुंदर वहाँ प्रवेश करती है।)

मुंदर : कौन कहता है कि हम विलासिता में डूब गये हैं? विलासिता में डूबे हैं राव साहब। बाँदा के नवाब, सेनापति तात्या।

1. लक्ष्मीबाई किससे बातें कर रही हैं?
2. उन्हें किस बात की चिंता सता रही है?

जूही : (सहसा) नहीं, मुंदर। सेनापति नहीं।

मुंदर : (मुस्कुराती है।) ओह, समझी! तुम तो उनका पक्ष लोगी ही।

जूही : (दृढ़ स्वर में) मैं उसका पक्ष नहीं लेती, लेकिन जो तथ्य है, उसको छिपाया नहीं जा सकता। सरदार तात्या राव साहब को अपने तन-मन का स्वामी मानते हैं।

मुंदर : और तुम उनको अपना स्वामी मानती हो।

जूही : हाँ, मैं उनको अपना स्वामी मानती हूँ और मानती रहूँगी। लेकिन उनसे भी अधिक मैं महारानी को अपना स्वामी मानती हूँ और महारानी से भी बढ़कर मैं अपने देश को अपना स्वामी मानती हूँ। देश के लिए मैं सरदार को भी ठुकरा सकती हूँ, ठुकरा चुकी हूँ।

मुंदर : (सकपकाकर) जूही तू तो नाराज़ हो गयी। मेरा यह मतलब नहीं था। मैं तो केवल इतना ही कहना चाहती थी कि जब तूने उन्हें अपना स्वामी मान लिया है तो तू उन्हें रोकती क्यों नहीं?

लक्ष्मीबाईः जूही ने उन्हें रोका है मुंदर। मैं जानती हूँ। जब राव साहब के कहने पर तात्या इसे नाचने के लिए बुलाने को आये थे तो इसने उनको बुरी तरह दुत्कार दिया था।

जूही : हाँ रानी, मैं स्वराज्य के लिए नाच सकती हूँ। बराबर नाचती रही हूँ, परंतु विलासिता में डूबने के लिए अपनी कला को किसी के गले की फाँसी नहीं बना सकती हूँ। जो मुझको ऐसा करने के लिए कहते हैं, उनको मैं ठोकर ही मार सकती हूँ।

लक्ष्मीबाईः (दीर्घ निश्वास लेकर) ठोकर ही तो नहीं मार सकती जूही। यही दर्द तो हमें कचोट रहा है। अगर ठोकर मार कर हम उनकी मदहोशी दूर कर सकते तो बात

ही क्या थी?

जूही : बाई साहब, मैं औरों की बात नहीं जानती। मुझे आज्ञा दीजिए, मैं ठोकर मारने को तैयार हूँ।

मुंदर : और मैं भी तैयार हूँ बाई साहब। चलो, हम सब चलकर उनकी नींद हराम कर दें।

लक्ष्मीबाई : नहीं मुंदर, नहीं। हम उनकी नींद हराम नहीं कर सकते। अब तो दुश्मन की ठोकरें ही उनको उस नींद से जगा सकती है।

जूही : दुश्मन की ठोकर? यह आप क्या कह रही हैं?

लक्ष्मीबाई : हाँ जूही, दोस्त की ठोकर अविश्वास की खाई को और भी चौड़ा कर देती हैं। क्या तुम नहीं जानती कि हम एक-दूसरे को किस दृष्टि से देखते हैं? क्या ऐसी स्थिति में मेरे कुछ कहने से शंकाओं की घटा और भी गहरा नहीं उठेगी?

मुंदर : बाई साहब ठीक कहती हैं। शंकाएँ अविश्वास पैदा करेंगी और उस अविश्वास से उत्पन्न निराशा को दूर करने के लिए पायल की झंकार और भी झनक उठेगी। श्रीखंड और लड्डुओं पर जान देने वाले ब्राह्मणों के आशीर्वाद का स्वर और भी तेज़ हो उठेगा। (सहसा कहीं दूर तोपों का स्वर उठता है।)

लक्ष्मीबाई : और जूही तू अगर तात्या को खोज सके तो तुरंत उन्हें यहाँ आने के लिए कह।

जूही : खोज क्यों नहीं सकती? आपकी आज्ञा होने पर मैं उन्हें पाताल से भी खींचकर ला सकती हूँ। (जाने को मुड़ती है कि रघुनाथराव तेज़ी से प्रवेश करते हैं।)

रघुनाथराव : महारानी, आपने सुना?

लक्ष्मीबाई : क्या रघुनाथ?

रघुनाथराव : महारानी, जनरल रोज की सेना ने मुरार में पेशवा की सेना को हरा दिया।

जूही : (काँपकर) क्या पेशवा की सेना हार गयी?

लक्ष्मीबाई : पेशवा की सेना हार गयी, यह अच्छा ही हुआ। अब पेशवा की आँखें खुलेंगी। रघुनाथ अपनी सेना को तैयार होने की आज्ञा दो। रोज ग्वालियर का क़िला नहीं ले सकेगा।

रघुनाथ : मैं जानता हूँ, वह कभी नहीं ले सकेगा। मैं अभी सेना को कूच के लिए तैयार करता हूँ। केवल आपको सूचना देने के लिए आया था। (जाता है।)

लक्ष्मीबाई : और जूही तुम भी जाओ। (सहसा बाहर देखकर) लेकिन ठहरो, शायद सेनापति तात्या इधर ही आ रहे हैं।

जूही : (बाहर देखकर) जी हाँ, ये तो सरदार तात्या ही हैं। (सरदार तात्या का प्रवेश)

लक्ष्मीबाई : कहिए सरदार तात्या, आज आप इधर कैसे भूल पड़े?

तात्या : बाई साहब, मैं किसी के लिए सरदार हो सकता हूँ, पर आपके लिए तो सेवक ही हूँ।

लक्ष्मीबाई : (व्यंग्य से) इतने बड़े सेनापति को इस प्रकार एक नारी के सामने झुकते लज्जा नहीं आती? खैर, छोड़ो इस बात को। यह तुम्हारी विनम्रता है। लेकिन यह तोपों की आवाज़ कैसी आ रही है? कौनसा उत्सव मनाया जा रहा है? शायद चाटुकारों में जागीर बाँटना अभी खत्म नहीं हुआ है?

तात्या : बाई साहब, आपको हमें लज्जित करने का पूरा अधिकार है। हम इसी योग्य हैं, लेकिन जो कुछ हो रहा है, वह आप जानती ही हैं।

लक्ष्मीबाई : शायद ब्रह्मभोज के उपलक्ष्य में ये तोपें चल रही हैं। श्रीखंड और लड्डुओं के लिए घी शक्कर की कमी तो नहीं पड़ी।

जूही : सरकार इस बार इनको माफ़ कर दीजिए।

तात्या : (व्यग्र होकर) बाई साहब, आप यूँ कब तक फटकारती रहेंगी?

लक्ष्मीबाई : तो मैं भी तैयार हूँ। तात्या तुमसे मुझे बहुत आशाएँ थीं। तुम्हारे रहते यह सब क्या हो गया?

जूही : सरकार, ये स्वामिभक्त हैं।

लक्ष्मीबाई : लेकिन आज हमें देशभक्तों की आवश्यकता है। खैर, अब भी कुछ नहीं बिगड़ा। अब भी बहुत कुछ किया जा सकता है।

तात्या : इसीलिए तो आया हूँ बाई साहब। आप जो कहेंगी वही करूँगा। जो योजना बनाएँ, उसी पर चलूँगा।

लक्ष्मीबाई : तो जाओ, तलवार संभाल लो। नूपुरों की झंकार के स्थान पर तोपों का गर्जन होने दो। भूल जाओ राग-रंग। याद रखो, हमें स्वराज्य लेना है। हमें रणभूमि में मौत से जूझना है।

तात्या : महारानी आपकी जय हो। मैं युद्ध के लिए तैयार होकर आया हूँ।

लक्ष्मीबाई : जानती हूँ। लेकिन सेनापति, इस बार यह याद रखना कि यदि दुर्भाग्य से विजय न मिल सकी तो तुम्हें सेना और सामग्री दोनों दुश्मन के घेरे से निकालकर ले जाना है।

तात्या : ऐसा ही होगा।

लक्ष्मीबाई : तात्या, मेरा मन कहता है कि यह मेरे जीवन का अंतिम युद्ध है। जीत हो या हार, मुझे किसी बात की चिंता नहीं। चिंता केवल इस बात की है, हमारी वीरता कलंकित न होने पाये।

तात्या : बाई साहब, वीरता आपको पाकर धन्य है। आपके रहते कलंक हमारी छाया को भी नहीं छू सकेगा। आज्ञा दीजिए, प्रणाम।

लक्ष्मीबाई : प्रणाम तात्या, मैं सीधी युद्धभूमि में जा रही हूँ, देर न लगाना। (तात्या चला जाता है।)

मुंदर : सरकार आज मैं बराबर आपके साथ रहूँगी।

जूही : और मैं तोपखाना सँभालूँगी।

लक्ष्मीबाई : और हम सब मिलकर या तो स्वराज्य प्राप्त करके रहेंगे या स्वराज्य की नींव का पत्थर बनेंगे।

(परदा गिरता है।)

3. लक्ष्मीबाई तात्या से क्यों नाराज़ थीं? तात्या ने उन्हें क्या आश्वासन दिया?
4. लक्ष्मीबाई साहसी नारी थीं? उदाहरण के द्वारा सिद्ध कीजिए।

अर्थग्राह्यता-प्रतिक्रिया

(अ) प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

1. मार्ग में हिमालय के अड़ने, डरावनी लहरों के थपेड़े मारने, नाविकों के सो जाने से क्या अभिप्राय है?
2. यह एकांकी सुनने के बाद उस समय की किन परिस्थितियों का पता चलता है?

(आ) पाठ पढ़िए। प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

1. तात्या कौन थे?
2. बाबा गंगादास ने रानी लक्ष्मीबाई से क्या कहा था?
3. रानी लक्ष्मीबाई ने क्या प्रतिज्ञा की थी?
4. जूही तात्या का पक्ष क्यों लेती है?

(इ) पाठ के आधार पर आशय स्पष्ट कीजिए।

1. स्वराज्य प्राप्ति से बढ़कर है स्वराज्य की स्थापना के लिए भूमि तैयार करना, स्वराज्य की नींव का पत्थर बनना।
2. शंकाएँ अविश्वास पैदा करेंगी और उस अविश्वास से उत्पन्न निराशा को दूर करने के लिए पायल की झंकार और भी झलक उठेगी।

(ई) गद्यांश पढ़कर प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

भारत का संविधान सभी महिलाओं को समानता का अधिकार (अनुच्छेद 14), राज्य द्वारा कोई भेदभाव नहीं करने (अनुच्छेद 15 (1)), अवसर की समानता (अनुच्छेद 16), और समान कार्य के लिए समान वेतन (अनुच्छेद 39 (घ)) का आश्वासन देता है। इसके अतिरिक्त यह महिलाओं और बच्चों के पक्ष में राज्य के द्वारा विशेष प्रावधान (अनुच्छेद 15 (3)) बनाने की अनुमति देता है। महिलाओं की गरिमा को ठेस पहुँचाने वाली अपमानजनक प्रथाओं का उन्मूलन (अनुच्छेद 51 (अ),(ई)) के भी अधिकार देता है। इन सबका पालन करना हमारा कर्तव्य है।

1. यहाँ किसके बारे में बताया गया है?
2. अनुच्छेद 15 (1) में क्या बताया गया है?
3. किस अनुच्छेद के अनुसार महिलाओं को समान कार्य के लिए समान वेतन की बात कही गयी है?

अभिव्यक्ति-सृजनात्मकता

(अ) इन प्रश्नों के उत्तर तीन-चार पंक्तियों में लिखिए।

1. एकांकी के आधार पर बताइए कि 'स्वराज्य की नींव' का क्या तात्पर्य है?
2. महारानी लक्ष्मीबाई का कौनसा कथन तुम्हें अच्छा लगा? क्यों?

(आ) वीरांगना लक्ष्मीबाई देशभक्ति की एक अद्‌भुत मिसाल थीं? स्पष्ट कीजिए।

(इ) 'स्वराज्य की नींव' एकांकी को अपने शब्दों में कहानी के रूप में लिखिए।

(ई) साहस, वीरता, आत्मविश्वास और आत्मनिर्भरता के महत्व पर दो-दो वाक्य लिखिए।

भाषा की बात

(अ) सूचना पढ़िए। वाक्य प्रयोग कीजिए।

1. नारी, मित्र, प्रेम (एक-एक शब्द का वाक्य प्रयोग कीजिए और उसके पर्याय शब्द लिखिए।)
2. असफलता, विश्वास (एक-एक शब्द का विलोम शब्द लिखिए। वाक्य प्रयोग कीजिए।)
3. शंका, क़िला, सूचना (एक-एक शब्द का वचन बदलिए और वाक्य प्रयोग कीजिए।)

(आ) सूचना पढ़िए। उसके अनुसार कीजिए।

1. स्वराज्य, निराशा (उपसर्ग पहचानिए।)
2. वीरता, ऐतिहासिक (प्रत्यय पहचानिए।)

(इ) उदाहरण देखिए। उसके अनुसार वाक्य बदलिए।

उदाहरण : राजू पुस्तक पढ़ता है। - राजू से पुस्तक पढ़ी जाती है।

1. लड़का भोजन करता है। 2. रानी ने आज्ञा दी। 3. लक्ष्मीबाई ने जूही से कहा।

(ई) रेखांकित शब्दों के स्थान पर नीचे दिये गये एक-एक शब्द का प्रयोग कर वाक्य बनाइए।

कक्षा में एक <u>लड़का</u> आया। सब <u>लड़के</u> कक्षा में पहुँच चुके थे। <u>लड़कों</u> में अनुशासन बना था।

1. लड़की 2. छात्र 3. छात्रा 4. बालक 5. बालिका

परियोजना कार्य

देशभक्ति से संबंधित किसी एकांकी का संकलन कर कक्षा में प्रदर्शन कीजिए।

पठन हेतु

माँ मुझे आने दे!

स्त्री और पुरुष दोनों समाज रूपी शक्ति के दो रूप हैं। समाज के निर्माण में दोनों का समान महत्व है। वेदों में स्त्री की तुलना देवी से की गयी है। कहते हैं जहाँ नारी का वास होता है वहाँ देवता बसते हैं। लेकिन सामाजिक विषमताओं के कारण आज भी भ्रूणहत्याएँ देखी जा रही हैं। ऐसी घटनाएँ सामाजिक, मानवीय अपराध है। ऐसे अपराध को समाप्त करना बेहद ज़रूरी है। इसी भाव को मुख्य विषय बनाते हुए कवयित्री मृदुल जोशी ने इस तरह लिखा है-

माँ चाहिए। बहन चाहिए।
पत्नी चाहिए।
फिर बेटी क्यों नहीं चाहिए?
"अनदेखी बिटियाँ करे पुकार।
मत करो यह अत्याचार।।"

माँ मुझे आने दे, डर मत आने दे।
फैलूँगी तेरे आँगन में हरियाली बनकर
लिपटूँगी तेरे आँचल में खुशबू बनकर
मेरी किलक और ठुमकते कदमों में
घर का सन्नाटा बिखर जाएगा
जो पसरा है पिता के दंभ
भाई की उद्दंडता के कारण सदियों से।
पोछ दूँगी अँधेरा, जो तेरे माथे की सिलवटों में सिमटा है
कभी-कभी झर जाता है ओस की बूँदों-सा, आँखों की कोरों से।
आने तो दे, धुल जाएगा सारा का सारा रुखीला अहसास
अकड़ीला मिज़ाज जो चिपका है घर की सारी की सारी दीवारों
बंद दरवाज़ों खिड़कियों में।
तेरी आँखों में तैरते ये समुंदर ये आसमान के अक्स
मैंने देख लिए हैं माँ।
माँ... जा सकती हूँ मैं दूर-पार, उस झिलमिलाती दुनिया में
ला सकती हूँ वहाँ से चमकीले टुकड़े तेरे सपनों के,
समुंदर की लहरों के थपेड़ों में ढूंढ़ सकती हूँ मैं
मोती और सीपी और नाविकों के किस्से।
कर सकती हूँ माँ, मैं सब-कुछ जो रोशनी-सा चमकीला
रंगों-सा चटकीला हो, पर आने तो दे, डर मत माँ...मुझे आने दे।

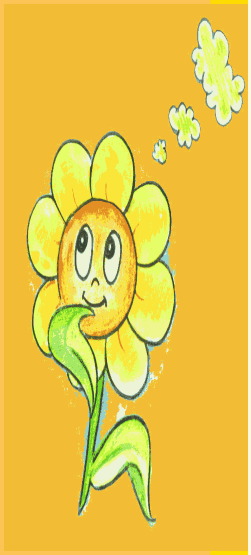

– मृदुल जोशी